10

सोशल मीडिया
शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति का नवीन उपकरण

चित्रा सिंह*

शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति की जब बात की जाती है तो उसे केवल पदोन्नति से जोड़ दिया जाता है। यह भुला दिया जाता है कि शिक्षक केवल एक पद ही नहीं है, बल्कि एक सामाजिक उत्तरदायित्व है और उसे केवल पदोन्नति से ही नहीं जोड़ा जा सकता। यह केवल एक पेशा ही नहीं मिशन भी है। पर यह धारणा इतनी दृढ़ हो गयी है कि शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति के लिए नीति-निर्धारण सरकारी विद्यालयों के स्तर पर सरकार करती है और निजी विद्यालयों के स्तर पर विद्यालय प्रबंधन। शिक्षक की इस नीति-निर्धारण में कोई भूमिका भी हो सकती है इस पर गौर भी नहीं किया जाता। परिणामस्वरूप शिक्षक पदोन्नत होते-होते प्रशासक तो बन जाता है पर इस प्रक्रिया में शिक्षक कहीं खो जाता है। सिर्फ़ सरकार और प्रबंधन ही नहीं स्वयं शिक्षक भी इस धारणा से अछूता नहीं है और वह भी इस बँधी-बँधाई प्रक्रिया में ढल जाता है। प्रस्तुत आलेख में शिक्षक की इस नीति-निर्माण में कैसी भूमिका होनी चाहिए और आज की संचार तकनीकी कैसे उसकी इस भूमिका के सफल क्रियान्वयन में उपयोगी हो सकती है, इस पर विचार प्रस्तुत किये गये हैं और एक शिक्षक की शिक्षक के रूप में ही व्यवसायिक प्रगति कैसे संभव हो सकती है इस बारे में सुझाव दिये गये हैं।

शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति के लिए सरकार और विद्यालय प्रबंधन ने एक तयशुदा ढाँचा बना रखा है। इसमें कार्यशालाओं, सेमिनारों, विषय विशेषज्ञों के व्याख्यानों और प्रशिक्षणों पर ज़ोर दिया जाता है। ये कार्यशालाएँ एक सीमा तक उपयोगी तो होती हैं और इनमें भाग लेकर शिक्षक कुछ हद तक लाभान्वित भी होता है, लेकिन ज़्यादा बड़ा लाभ उसे शैक्षिक स्तर पर नहीं, प्रशासनिक स्तर पर मिलता है। यह लाभ पदोन्नति या पे-स्केल में वृद्धि के रूप में होता है। इस प्रक्रिया का अवलोकन करने पर आप यह अनुभव कर सकते हैं कि शिक्षक को भी एक छात्र बना दिया गया है और यह कार्यशालाएँ आदि उसकी परीक्षाएँ हैं। इन्हीं से उसे गुज़र कर अपने व्यवसाय की अगली सीढ़ी तक पहुँचना है, जैसा कि एक छात्र भी करता है। यह सही है कि सीखने की प्रक्रिया जीवन में अनवरत चलती है और सभी इससे गुज़रते हैं। लेकिन यह सीखना स्वयं

* *सह प्राध्यापक*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

के प्रयासों से ज़्यादा अच्छी तरह किया जा सकता है। शिक्षक भी यदि स्वयं इस प्रक्रिया को निर्धारित करें, इसका नियामक बनें तो यह प्रक्रिया अधिक कारगर हो सकती है। इसके लिए शिक्षकों को स्वयं आगे आना होगा। आपस में एक-दूसरे के साथ काम करना होगा। यह ध्यान भी रखना होगा कि सामूहिक होने की यह प्रक्रिया प्रशासनिक लाभों के लिए न हो, जैसाकि प्राय: होता है। एक शिक्षक के रूप में अपने विषय पर और अपने विद्यार्थियों पर उसकी पकड़ और प्रभावी हो इसके लिए हो। समूहीकरण की यह प्रक्रिया संचार युग में बहुत आसान हो गयी है और शिक्षकों को इस सुविधा का लाभ लेना होगा। सोशल मीडिया में अपने दैनंदिनी जीवन में तो वे क्रियाशील होते ही हैं, यही क्रियाशीलता व्यवसायगत भी हो सकती है इस पर भी शिक्षकों को ध्यान देकर आगे आना होगा। तकनीक तो उद्देश्य निरपेक्ष होती है। यह एक हथियार नहीं उपकरण है जिसे कुशलता से उपयोग करने वाला एक नयी दुनिया का निर्माण कर सकता है और शिक्षक तो स्वाभाविक निर्माता है, वह छात्र का भविष्य निर्माण करता है और प्रकारान्तर से देश का भी।

एक शिक्षक को यह सबसे पहले समझना होगा कि इस आदर्श को वह व्यवहार के धरातल तक उतारें। एक शिक्षक ही यह कर सकता है। बस उसे इसके लिए पारंपरिक और बँधी-बँधाई रीत से हटकर आधुनिक और आज के संदर्भ में सोचना होगा।

शिक्षक संगठन — व्यावसायिक प्रगति के लिए

शिक्षकों का संगठन आपसी सहयोग से व्यावसायिक प्रगति के लिए हो, प्रशासनिक नहीं शैक्षिक हो, अधिकारों के प्रति संघर्ष के लिए ही नहीं। देशभर में शिक्षकों के अनेक संगठन हैं और वे ज़रूरी भी हैं, लेकिन वे एक-आयामी हैं। देशभर में फैले दूसरे सभी संगठनों की तरह वे भी अपने अधिकारों की बात ही ज़्यादा करते हैं और इसे ही व्यावसायिक प्रगति से जोड़ते हैं। यह व्यावसायिक प्रगति शिक्षक के व्यवसाय का एक आयाम हो सकती है। लेकिन व्यावसायिक प्रगति का मूल अर्थ शिक्षक की अपने विषय के प्रति जागरुकता, उसके बारे में निरंतर अध्ययन, उसमें नवाचार और शिक्षण में इस प्रकार प्राप्त नवीनतम जानकारियों, उपलब्धियों और अपने विषय के नये आयामों को छात्रों तक पहुँचाना भी है। अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था का जो ढाँचा है उसमें निर्धारित पाठ्यक्रम को तय समय में पूरा कराकर शिक्षक के कर्तव्य की पूर्ति हो जाती है और उसके कार्य का मूल्यांकन उसके विषय में कितने प्रतिशत छात्र सफल रहे इसके द्वारा कर लिया जाता है। यहाँ कितने प्रतिशत विद्यार्थी कितने प्रतिशत अंकों में सफल हुए यही मापदंड शिक्षक की शिक्षक के रूप में सफलता का सूचक है। ज़ोर सफल रहने पर है, सीखने-सिखाने पर नहीं है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षक और प्रशासन/प्रबंधन के बीच काम का बँटवारा हो गया है। एक ओर शिक्षक संगठन जहाँ अपने अधिकारों के लिए एकजुट रहते हैं। वहीं दूसरी ओर प्रशासन/प्रबंधन उनकी तयशुदा व्यावसायिक प्रगति के चरणों की पूर्ति के लिए विभिन्न तरह की कार्यशालाओं, सेमिनारों, विषय विशेषज्ञों के व्याख्यानों और प्रशिक्षणों की व्यवस्था और उस पर अमल के लिए सक्रिय रहता है।

शिक्षक द्वारा, शिक्षक की और शिक्षक के लिए, जैसी व्यवस्था अभी भी पूर्णतः विकसित नहीं हो पायी है जो किसी भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था का आधार होती है। जैसे, जनता प्रजातंत्र में स्वयं तय करती है कि उसे कैसा नेतृत्व और नीति चाहिए और उस नेतृत्व को क्या करना चाहिए वैसा ही शिक्षक को भी करने का अधिकार और अवसर देना चाहिए।

शिक्षा के बारे में शिक्षक को ही तय करने का अधिकार होना चाहिए और उसकी बात को ही अंतिम माना जाना चाहिए।

शिक्षक नीति-निर्माता के रूप में

गांधी जी इस बारे में विचार करने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए, उसका स्वरूप कैसा होगा और कैसे वो दी जायेगी ये शिक्षाविद्, सरकार तथा विद्वतजन तय नहीं करेंगे, बल्कि शिक्षक और उनके साथ छात्र वर्ग इस प्रक्रिया में योगदान करने वाला एक मात्र समूह होगा। शिक्षक को नीति-निर्माता के रूप में आगे आना होगा। उसे अपनी व्यावसायिक प्रगति के लिए प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम निर्धारण आदि में सीधे और एकमात्र हस्तक्षेप करने को तैयार रहना होगा। जबकि शिक्षक की प्रगति शिक्षक के द्वारा ही निर्धारित होगी तो उसके पालन की बेहतर स्थितियाँ बनेंगी और परिणाम बेहतर होंगे।

शिक्षक एक समूह के रूप में अपनी आवश्यकताओं जैसे — प्रशिक्षण की ज़रूरत, प्राप्त प्रशिक्षण का विश्लेषण, शिक्षा और शिक्षण पर सलाह देकर इस प्रकार की गतिविधियों को ज़्यादा कारगर बना सकता है। अपना लक्ष्य पूर्ण कर सकता है, उन्हें प्रासंगिक बना सकता है और अपने सीमित समय का बेहतर उपयोग कर सकता है।

इसके लिए शिक्षक को प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी स्वयं लेनी होगी और प्रशासन एवं प्रबंधन को उसे यह देनी होगी। सेमिनार, प्रशिक्षण, व्याख्यान, टेकमीट और इन सबका बाद में अनुसरण, इससे प्राप्त जानकारियों का कक्षाओं में उपयोग, विषय विशेष के समूहों का निर्माण ताकि जानकारियों का आदान-प्रदान कर कक्षा में उन्हें अपनाया जा सके, आदि इसके अंग हैं।

जब शिक्षक यह तय करेगा तो वह यह भी ध्यान रख पाएगा कि इससे उसका शिक्षण प्रभावित न हो, क्योंकि विद्यालय की समय सीमा का ध्यान भी रखा जाना ज़रूरी है।

शिक्षक — अच्छा शिक्षण और सीखने के नये आयाम

अच्छा शिक्षण और सीखना कैसा होना चाहिए इन बातों पर एक शिक्षक ज़्यादा अच्छे से गौर कर सकता है। मूलभूत जीवन मूल्यों को दैनिक जीवन से कैसे जोड़ा जा सकता है, वह इस पर बेहतर काम कर सकता है। अतः शिक्षक की व्यवस्थागत प्रगति को शिक्षण की प्रैक्टिस से भी जोड़ना होगा। इसके लिए उसे दिया जा रहा प्रशिक्षण अकादमिक पाठ पर नहीं कक्षा में पढ़ाये जा रहे पाठ पर होना चाहिए। इस प्रक्रिया का अवलोकन स्वयं शिक्षक द्वारा ही हो। यह शिक्षक के स्वयं के विद्यालय में या दूसरे विद्यालय में किया जा सकता है। इसलिए उन्हें ऐसी कार्यशालाएँ दी जानी चाहिए, जिसमें उन विषयगत पाठों पर चर्चा हो जो वे पढ़ा रहे हों। इसके निर्धारण में शिक्षक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इसके अलावा स्वाध्याय भी शिक्षक को मज़बूत बनाता है और इसके अनेक माध्यम आज उपलब्ध हैं। संचार तकनीक और सोशल मीडिया उसमें महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

सोशल मीडिया — शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति का एक उपकरण

हमारी शती की संचार-क्रांति ने हमें जो सुविधाएँ उपलब्ध करायी हैं और हमारे जीवन में जो बदलाव आया है उसकी सबसे मज़बूत अभिव्यक्ति सोशल मीडिया के रूप में हुई है। फ़ेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप, मैसेन्जर आदि कई माध्यम और प्लेटफ़ार्म आज हमें उपलब्ध हैं। इन्होंने हमें आपस में संवाद करने, जोड़े रखने और अभिव्यक्त करने में इतना सहयोग किया है कि एक पूरी दुनिया हमारी मुट्ठी में सिमट आयी है। जैसा कि कहा जाता है हर चीज़ अब सिर्फ़ एक क्लिक पर उपलब्ध है। सामाजिक जुड़ाव का सशक्त माध्यम होने के कारण इसे सोशल मीडिया नाम दिया गया है जो सार्थक है। बस इसकी सार्थकता इसके सकारात्मक उपयोग में है।

हममें से कोई भी इन माध्यमों के उपयोग से अछूता नहीं है। शिक्षक भी नहीं होगा और होना भी नहीं चाहिए। आवश्यकता बस इस बात की है कि वो इस माध्यम को अपनी व्यवसायिक प्रगति के लिए एक उपकरण की तरह काम में लें हथियार की तरह नहीं और मनोरंजन या समय गुज़ारने के साधन के रूप में भी नहीं।

सोशल मीडिया के इस प्लेटफ़ार्म को स्टाफ़रूम की तरह काम में लिया जा सकता है। बस उसकी नकारात्मकता हावी न हो जाये इसका ध्यान रखना होगा। यह स्वस्थ बहस का मंच बने। वाद-विवाद का नहीं।

शिक्षक को नेटवर्किंग भी करनी चाहिए जिससे समान विचारधारा के दूसरे शिक्षक उससे जुड़ें। इस नेटवर्किंग मे केवल शिक्षक ही शमिल न हो, बल्कि शिक्षा में और उसकी प्रगति में रुचि रखने वाले छात्रों के अभिभावक एवं छात्र भी शमिल हो। इसका कारण यह है कि शिक्षण एक ऐसा व्यवसाय है जिसके बारे में प्रायः हर व्यक्ति यह राय रखता है कि इसे कैसे किया जाना चाहिए या इसे कैसा होना चाहिए।

इस प्रकार समान विचारधारा और व्यवसाय के लोग जब जुड़ते हैं तो विचारों के आदान-प्रदान से बंधन मज़बूत होता है। नये रिश्ते बनते हैं और अपने व्यवसाय के प्रति जुड़ाव गहरा होता है। सोशल मीडिया इसके लिए सबसे अच्छा माध्यम है। इससे व्यवसाय में मदद, सलाह, सूचना, शिक्षण में मदद करने वाले नये उत्पादों तथा विषय विशेषज्ञों की विशेषज्ञता का सीधा लाभ आसानी से मिल जाता है। इस तरह सोशल मीडिया एक उपलब्धि भी है।

अब हम देखें कि किस तरह सोशल मीडिया के ये विभिन्न उपकरण शिक्षक की व्यवसायिक प्रगति में योगदान दे सकते हैं।

- *ट्विटर* — इसका सबसे बेहतर उपयोग प्रश्न करके किया जा सकता है। एक प्रश्न में आप अनेक उत्तर पा सकते हैं। शिक्षा के बारे में बात कर सकते हैं। इस पर सक्रिय रहकर एक शिक्षक स्वयं बहस के अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय तथा स्थानीय मुद्दों तक पर अपनी राय रख सकता है और दूसरों के विचार जान सकता है।

- #educhat#kinderchat#niedchatie#eyta lking — इसमें शिक्षक की सहायता करने वाले कुछ अति प्रचलित अवयव है।
- *फेसबुक* — फेसबुक पर अपनी सक्रियता को एक शिक्षक दूसरे शिक्षकों के साथ एक समूह तैयार कर रचनात्मक अधिगम/खेल आधारित अधिगम जैसे नवाचारों को अपनाने के बारे में अपनी राय रख सकते हैं। राय ले सकते हैं। अपने द्वारा किये गये नवाचारों को प्रदर्शित कर सकते हैं और उस पर सुझाव प्राप्त कर सकते हैं और दे सकते हैं।
- *वाट्स-ऐप* — हममें से लगभग प्रत्येक आज वाट्स-ऐप पर सक्रिय हैं। अकेला भी और किसी न किसी समूह में भी। ये अबतक का सबसे सशक्त सोशल मीडिया उपकरण है। शिक्षकों को भी इस पर अपना ग्रुप बनाना चाहिए। बस उसका उद्देश्य व्यावसायिक प्रगति यानि अपने विषय से संबंधित जानकारी में प्रगति करना होना चाहिए। यही इस माध्यम की सकारात्मकता है कि इससे तुरंत आपको लाभ मिल जाते हैं। शिक्षकों को भी इस माध्यम का उपयोग बुद्धिमतापूर्ण रूप से कर अपनी व्यावसायिक प्रगति को आधार देना चाहिए।
- इस माध्यम के वॉयस-कॉल और वीडियो-कॉल जैसे फीचर शिक्षक को अपने काम को वास्तविक समय में दूसरों तक पहुँचाने में मददगार हो सकते हैं। किसी भी विषय पर सामूहिक विचार-विमर्श में शामिल हो सकते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें कागज़ी कार्यवाही से छुटकारा मिल जाता है क्योंकि सब कुछ अपने-आप सेव होता जाता है और उसके खो जाने का खतरा भी नहीं रहता। इस पर एक विषय पर उतने शिक्षक विचार कर सकते हैं जितने एक क्लास में छात्र होते हैं।
- ऑनलाइन नेटवर्किंग शिक्षकों को अपना एक स्वयं का नेटवर्क विकसित करना चाहिए। यह आमने-सामने, एक-दूसरे से मिलने, विचारों के आदान-प्रदान, सभी क्षेत्रों के सभी लोगों से बातचीत करने, अपने शोधपर्चों को सबके साथ साझा करने, स्वयं की वेबसाइट विकसित करके सभी तक पहुँचाने इत्यादि में मदद करती है। इस सबसे आप अपने काम के बारे में लोगों को यह बता सकते हैं कि आप शिक्षण और उसकी प्रक्रिया के बारे में क्या विचार रखते हैं और इस पर उनके विचार और सुझाव भी जान सकते हैं।

शिक्षण का अंतर्राष्ट्रीय आयाम — इंटरनेट और सोशल मीडिया की भूमिका

शिक्षण अब एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है। शिक्षक अब बाहर और अपने देश के अलावा दूसरे देशों की शिक्षा और शिक्षा पद्धति पर ध्यान देने लगे हैं, ताकि वहाँ हो रहे नवाचारों को अपनाकर अपनी व्यवसायिक प्रगति को दृढ़ कर सकें। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न विषयों के शिक्षण में अनेक नवाचार किये जाते रहे हैं और किये जा रहे हैं।

जापान में शिक्षकों के आपसी सहयोग से किया जाने वाला शिक्षण बहुत प्रचलित शिक्षण पद्धति है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्सुकता जगाती रही है।

इस पद्धति में शिक्षकों के आपसी सहयोग से एक पाठ तैयार किया जाता है। उनके शिक्षण का अवलोकन और फिर विश्लेषण किया जाता है। शिक्षक एक-दूसरे से सीखते हैं। अपने विचार साझा करते हैं तथा उन्हें अपने शिक्षण में स्थान देते हैं।

यह शिक्षकों के लिए एक खुला मंच होता है जहाँ वह विचार-विमर्श करते हैं। व्यावसायिक प्रगति में आपसी सहयोग का यह जापानी उदाहरण हम भी अपना सकते हैं और यह सब आभासी धरातल पर इंटरनेट और सोशल मीडिया की मदद से भी किया जा सकता है।

उपसंहार

शिक्षा एक अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है और शिक्षक इसका चालक है। चालक का निष्पात होना इस प्रक्रिया में बहुत सहायक होता है। शिक्षक को इस बारे में स्वयं प्रयास करने होंगे, उसे नीति निर्धारकों, प्रशासकों और प्रबंधन की ओर न देखकर स्वयं इस दिशा में आगे कदम बढ़ाना होगा। सूचना तकनीक के इस युग में तो यह और भी आसान हो गया है और वह बगैर अपने कार्यस्थल, अपने आस-पास, अपने घर से दूर जाए निरंतर सक्रिय रह सकता है। यह दुनिया उसकी अँगुलियों पर सिमट आयी है। बस उसे एक क्लिक भर करना है एक पूरी दुनिया उसके लिए उपलब्ध हो जाती है और वह केवल एक शिक्षक ही नहीं रह जाता, बल्कि शिक्षा का नियामक भी बन सकता है। आवश्यकता बस इस नये माध्यम के सकारात्मक पक्षों को अपनाने की है।